1936F Vimal Chandra Sethi

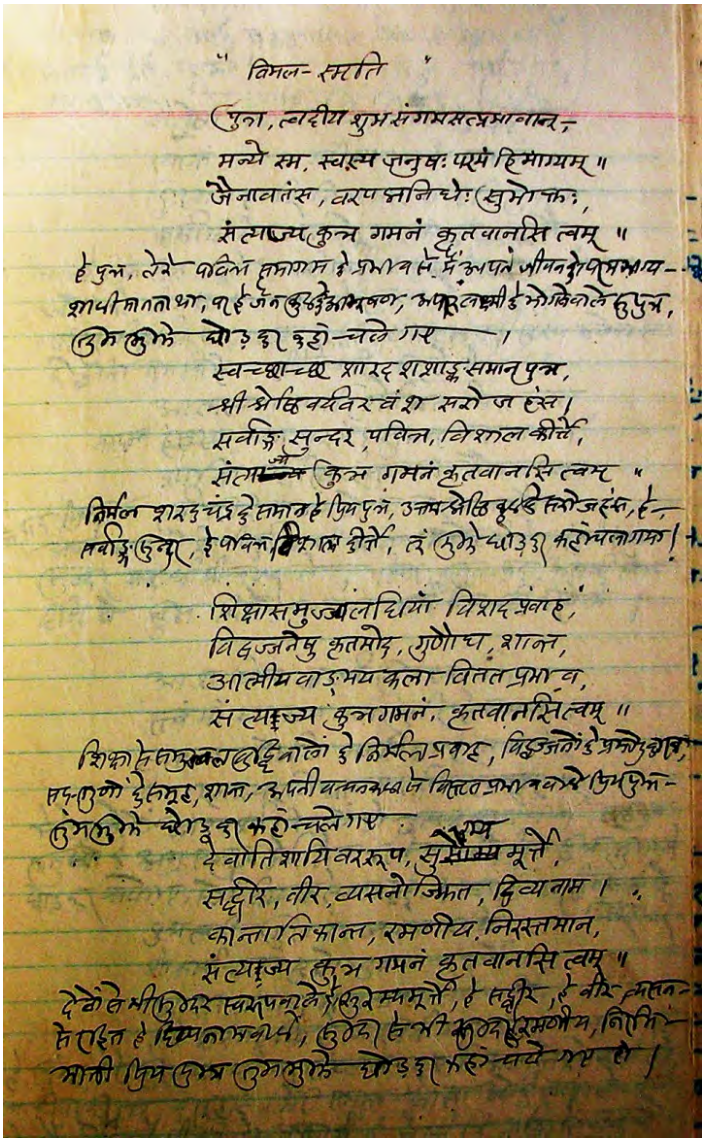

" विमल- स्मृति "

पुत्र, त्वदीय शुभसंगमसत्प्रभावात्,
मन्ये स्म, स्वस्य जनुषः परमं हि भाग्यम्॥
जैनावतंस, वरपद्मनिधेः सुभोक्तः,
संत्यज्य कुत्र गमनं कृतवानसि त्वम्॥

हे पुत्र, तेरे पवित्र समागम के प्रभाव से मैं अपने जीवन को परम भाग्यशाली मानता था, हे जैन कुल के आभूषण, अपार लक्ष्मी के भोगने वाले हे पुत्र, तुम मुझे छोड़कर कहाँ चले गए।

स्वच्छाच्छ शारद शशाङ्क समान पुत्र,
श्री श्रेष्ठिवर्यवर वंश सरोज हंस।
सर्वाङ्ग सुन्दर, पवित्र, विशाल कीर्त्ते,
संत्यज्य कुत्र गमनं कृतवानसि त्वम्॥

निर्मल शरद् चंद्र के समान हे प्रिय पुत्र, उत्तम श्रेष्ठि कुल के सरोज हंस, हे सर्वाङ्ग सुन्दर, हे पवित्र विशाल कीर्ते, तुम मुझे छोड़कर कहाँ चले गए!

शिक्षासमुज्ज्वलधियां विशद प्रवाह,
विद्वज्जनेषु कृतमोद, गुणौघ, शान्त,
आत्मीय वाङ्मय कला वितत प्रभाव,
संत्यज्य कुत्र गमनं कृतवानसि त्वम्॥

शिक्षा से समुज्ज्वल बुद्धि वालों के निर्मल प्रवाह, विद्वज्जनों के प्रमोद दाता, सद्‌गुणों के समूह, शान्त, अपनी वाङ्मय कला से विस्तृत प्रभाव वाले प्रिय पुत्र तुम मुझे छोड़कर कहाँ चले गए।

देवातिशायि वररूप, सुसौम्य मूर्त्ते,
सद्धीर, वीर, व्यसनोज्झित, दिव्य नाम।
कान्तातिकान्त, रमणीय, निरस्तमान,
संत्यज्य कुत्र गमनं कृतवानसि त्वम्॥

देवों से भी सुन्दर स्वरूप वाले हे सुसौम्य मूर्ते, हे सद्धीर, हे वीर, व्यसन से रहित हे दिव्य नाम वाले, सुन्दर से भी सुन्दर रमणीय, निरभिमानी प्रिय पुत्र तुम मुझे छोड़कर कहाँ चले गए हो।

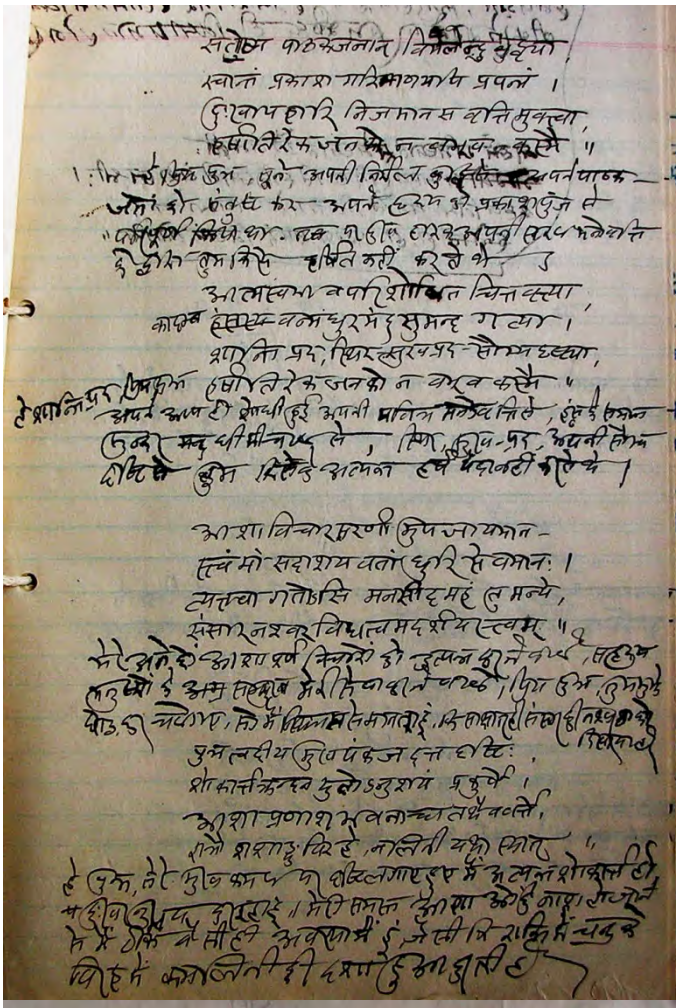

सन्तोष्य कठकजनान् विमलेन्दु मुद्धयो
स्वान्तं प्रकाश गरिमाणमपि प्रपन्नं ।
दुःखापहारि निजमानस वृत्तिमुक्त्वा,
हर्षातिरेक जनको न कथं [illegible] "

हे [illegible], तूने अपनी निर्मल [illegible] अपने पाठक-जनों को संतुष्ट कर अपने हृदय को प्रकाशपुंज से परिपूर्ण किया था। तब [illegible] अपनी सरल मनोवृत्ति दुःखहारी तुमने हर्षातिरेक कहीं कर दी।

आत्मस्वयं वपुशि शोभित चित्तवृत्त्या,
कादम्ब हंस वनमधुर मंद सुमन्द गत्या ।
शान्ति प्रद, स्थिर सुख प्रद सौम्य दृष्ट्या,
हर्षातिरेक जनको न कथं करोषि "

हे शान्तिप्रद, [illegible] अपने आप ही शोभी हुई अपनी पवित्र मनोवृत्ति से, हंस के समान [illegible] मंद धीमी चाल से, स्थिर, सुख-प्रद, अपनी सौम्य दृष्टि से तुम किसे अत्यन्त हर्ष प्रदान नहीं करते थे।

आशा विचार सरणी [illegible] जायमान-
स्त्वं मो सदाशय वतां धुरि से वमानः ।
त्यक्त्वा गतोऽसि मनसीदमहं तु मन्ये,
संसार नश्वर विधित्वमदर्शयस्त्वम् "

मेरे अनेक [illegible] आशा पूर्ण विचारों को उत्पन्न करने वाले, सहृदय [illegible] के अग्र [illegible] मेरी [illegible] प्रिय [illegible] तुम मुझे छोड़ कर चले गए, तो मैं [illegible] समझता हूं, कि [illegible] नश्वरता को दिखा दी।

पुष्प त्वदीय शुचि पंकज दत्त दृष्टिः,
शोकार्त्तकन्दर कुलोऽनुशयं प्रकुर्वे ।
आशा प्रणाश भवनाच्च तथैव वर्त्ते,
रात्रौ शशांक विरहे, नलिनी यथा स्यात् "

हे पुष्प, तेरे शुचि कमल पर दृष्टि लगाए हुए मैं अत्यन्त शोकार्त्त हो, [illegible] कर रहा हूं। मेरी समस्त आशा [illegible] नष्ट हो गई। [illegible] मैं ठीक वैसी ही अवस्था में हूं, जैसी कि रात्रि में चन्द्र के विरह में कमलिनी की दशा हो जाती है।

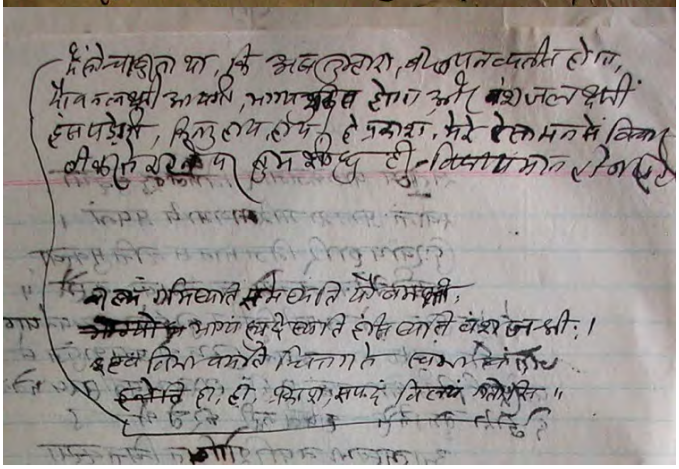

मैं सोचा करता था, कि अब तुम्हारा, बचपन व्यतीत होगा, यौवन लक्ष्मी आयेगी, भाग्य [illegible] होगा और वंश जल [illegible] हंस पड़ेगी, किन्तु हाय, हाय, हे प्रकाश, मेरे [illegible] मन में विचार [illegible] तुम [illegible] ही विलीन [illegible]

[illegible] परिपक्व [illegible] यौवनमथ [illegible]
[illegible] भाग्यं [illegible] वंश जन [illegible] ।
[illegible] विचि [illegible] चिन्तनाते [illegible]
[illegible] हा, हा, प्रकाश, सपदं विलयं गतोऽसि "

दुःख प्रपीडित जनार्थ कृतावतार,
सद्दान मान करणे, प्रयतावधान,
आत्मीयवर्ग परितोषक, तोषमूर्ते,
संत्यज्य कुत्र गमनं कृतवानसि त्वम् ॥ ३५

दुःखों से संतप्त जनों के लिए ही जन्म लेने वाले, हमेशा सम्मान पूर्वक दूसरे को दान देने में सावधान, स्वजनों को अत्यन्त सन्तोष देने वाले, हे संतोष की मूर्ति प्रिय तुम हमें छोड़ कहाँ चले गए हो।

आशान्त विस्तृत यशो, यशसां निकेत,
रत्नप्रभाङ्क कृतमोद, विराजमान,
वाणी — वाचो विलास परितोषित लालचन्द्र,
संत्यज्य कुत्र गमनं कृतवानसि त्वम् ॥

हे दिगन्त व्यापी यश वाले, यशः पुञ्ज, रत्नप्रभा (अपनी माता) की गोद में हर्ष से सुशोभित होने वाले, और (अपनी विलासमय वाणी से तुम) लालचन्द को प्रसन्न करने वाले, तुम हमें छोड़ कर कहाँ चले गए।

तेजोवतां गुणवतां परिपूर्ण धाम,
आनन्द वर्धनि, मराल समान रूप,
यातोऽसि हे विमल चन्द्र, पुण्य मूर्ते,
संत्यज्य कुत्र परिखेदित बन्धु वर्गान् ॥

तेजस्वी और गुणी जनों के पूर्ण आगार, आनन्द को बढ़ाने वाले मराल समान रूप वाले, पुण्य की मूर्ति हे विमलचन्द्र अपने दुःखी बन्धुओं को छोड़ कहाँ चले गए।

दुर्वार क्रोधमद निर्दहने प्रवीण,
आत्मीय कार्य करणे सततावधान।
तेजः कुमारि हृदये रचितार्ति तेजः,
संत्यज्य कुत्र गमनं कृतवानसि त्वम् ॥

दुर्वार क्रोध और मान के दहन में अति प्रवीण, अपना काम करने में निरंतर सावधान, तेजकुमारी (अपनी धर्मपत्नी) के हृदय में अत्यन्त प्रताप से आर्तिकृत करने वाले, तुम हमें छोड़ कहाँ चले गए हो।

आनन्ददायक, सुखप्रद, मातृपार्श्वे,
क्रीडां विधाय बहुलां निजबालकाले,
संतोषितो मुदितमानस, गत्वयाऽहं,
सोऽतीव दुःखजलधौ त्रुटितोऽद्य मग्नः हा ।

हे आनन्द-वर्धक, हे सुखप्रद, हे प्रसन्नचित्त, बाल्यकाल में, तुमने अपनी माँ के पास, नाना प्रकार की क्रीड़ाकर मुझे अत्यन्त प्रसन्न किया था, किन्तु हाय अब, आज तुमने ही अत्यन्त भारी दुःख समुद्र में मुझे डुबो दिया है।

गत्वाजवेन जननीं शुभसौम्यशीलां,
पृष्ठस्थभागगत वस्त्रविधिं विधृत्य,
कोऽहं निरूप्य सहसेति सुधावमानो—
हर्षातिरेक जनको न बभूव कस्मै (कः हर्ष-चासीत्) ।।

हे तुम बचपन में तुम अपनी जननी के पास जाकर, उनकी पीठ के वस्त्र को खींचकर और "मैं कौन हूँ" ऐसा कहकर शीघ्र भागते हुए किसके मन हर्ष को पैदा नहीं करते थे।

माधुर्ययुक्त निजशैशवजन्यवाण्या,
संतोषितोऽखिल विवेकि सुबन्धुवर्गः ।
क्रीडन् सदा सहजसुन्दर बालरूप,
हर्षातिरेक जनको न बभूव कस्मै (कः कस्य चासीः) ।।

और बाल्यकाल में हे सहज सुन्दर बालस्वरूप, अपनी माधुर्यमयी (वाणी) बोली से सम्पूर्ण विवेकी बन्धुजनों को प्रसन्न कर हमेशा क्रीड़ा करते हुए किसके मन हर्ष को पैदा नहीं करते थे।

बाल्यं विलङ्घ्य समवाप्य कुमारकालं,
दत्तावधानमनसा (च प्रवृत्त धर्मम्) पठित धर्मस्त्वम् ।
अभ्यस्य शास्त्र (विधिधातः) कुशाग्रबुद्धे,
हर्षातिरेक जनको न बभूव कस्मै (कः कस्य चासीः) ।।

हे कुशाग्र बुद्धि वाले प्रिय तुम बाल्यपने को लांघकर और कुमारपने को पाकर, दत्तचित्त होकर धर्म को पढ़कर, बन्धु जनों को शास्त्रों का अभ्यास कर किसे हर्षित नहीं किया था।